आंक्खां तै पाणी बहण लाग्या। दोन्नूं एक-दूसरे नैं देखदे रहे।

मां तै अग्या लै कै अरणक फेर अचार्य अरहन्नूमित्तर धोरै पहौंच्या। आपणी गलती की माफी मांग्गी। अचार्य जी नैं उस तै हट कै मुनी-दिक्सा दे दी।

एक दन अरणक मुनी नैं अचार्य अरहन्नूमित्तर तै कही, "अचार्य जी! आप मन्नैं सब तै ऊंच्ची साधना बताओ। वा चाहे कितणी-ए मुस्किल हो। मैं उसनैं जरूर करूंगा। ईब मेरे मन मैं कोए डर कोनी रह्या।"

फेर अचार्य जी नैं उन तै परम समाद्धी (संथारा) का तरीका बताया। बोल्ले, "जै समभाव तै कोए इस समाद्धी की साधना कर ले तै उसनैं मुकती मिल ज्या।"

अरणक मुनी नैं अचार्य जी तै असीरवाद ले कै वा परम समाद्धी धार ली। वे पहाड़ां मैं किस्से सूं- सां जंगा मैं एक सिला पै जम कै बैठगे अर समाद्धी मैं खू गे। इतणा बेरा भी ना रह्या अक बाहर के होण लाग रह्या सै। कद तै सूरज लिकड़्या अर कद छिप ग्या। वे पहाड़ की तरियां जम्मे रहे। धूप तै उनका सरीर जल़ ग्या पर अरणक नैं आंख भी कोन्यां झपकी। इस समाद्धी मैं उन नैं एक दन परम ग्यान हो ग्या। वे सारे दुक्खां तै छूट कै मुकती मैं चाल्ले गए।

मुनियां नैं अर गिरस्तियां नैं जिब बेरा लाग्या तै सबनैं या-ए बात कही, "अरणक मुनी का मन पहल्यां कितना कमजोर था अर फेर ओ-ए मन कितना ठाड्डा हो ग्या। मोत पै भी ओ डिग्या कोन्यां। धन्न हो अरणक मुनी नैं। ❑❑

मन्तर का चिमत्कार

एक सेट था। उसकी नौकार मंतर मैं करड़ी सरधा थी। ओ सेट नरम सुभा का था अर उसके जी मैं दया-धरम भी था। ओ सोच्या करता अक ब्योपार करण खात्तर जिब मैं परदेस जाऊं तो सैह्र के ओर हीणे लोग्गां नै भी आपणी गेल्लां ले जाऊं। न्यूं सोच कै परदेस जाण तै पहलां उसनैं एक दन सैह्र मैं डूंडी पिटवाई- "जो कोए ब्योपार करण खात्तर परदेस जाणा चाह्वै, ओ मेरी गेल्लां चाल्लै। किस्से धोरै पूंज्जी ना हो तो मैं उसनैं पूंज्जी द्यूंगा। ब्योपार मैं घाट्टा हो ग्या तो ओ भी मैं ए भरूंगा।"

या खबर सुण कै घणे-ए हुमाए मैं भरे लोग उसकी गेल्लां हो लिए। पूरे लस्कर नैं ले कै सेट चाल पड़्या। सफर करती हाणां उनका लस्कर ईसे भारी जंगल़ मैं कै लिकड़्या, जित डाक्कू रह्या करते। डाकुआं नैं ओ लस्कर निगाह लिया। ओं भी लुक-छप कै उसके पाच्छै-पाच्छै चाल पड़े। सांझ होई। लस्कर नैं एक जंगा पड़ा गेर लिया। लस्कर के लोग्गां नैं रोट्टी-पाणी त्यार कर्या अर खा-पी लिया। सोण की त्यारी करण लाग्गे तै सोच्ची- अक यो जंगल़ सै। सारे सो ज्यांगे तो कुक्कर काम चाल्लैगा। थोड़े-से लोग्गां नैं तै पैह्रा देणा चहिए।

सेट बोल्या- तम सारे अराम तै सो जाओ। रूखाल़ी करण की जुम्मेदारी मेरी सै। सारे सो गे। न्यूं देख कै सेट नैं आपणे भगवान नौकार मंतर का पाठ करकै लस्कर के चारूं कान्नीं एक चक्कर लाया। चक्कर ला कै ओ भी सो ग्या।

जिब सारे माणस सो गे तो डाकुआं नैं आपणा काम करण की सोच्ची। वे हथियार ले कै हमला करण खात्तर आग्गे नैं सरके। उनती देख्या- अक लस्कर के तै सारे लोग सोण लाग र्‌हे सैं अर पैंतीस फौजी जुआन घोड़ां पै बैट्‌ठे चारूं कान्नीं घूम-घूम कै पैह्‌रा देवैं सैं। फौजी जुआन्नां नैं देख कै डाकुआं की हमला करण की हिम्मत कोन्यां पड़ी। लुके होए वे बोल -बाले देखदे रहे।

डाक्कू सोच मैं पड़गे अक लस्कर गेल्लां तै फौजी ना थे। रातूं-रात चाणचक ये कित तै आ गे?

गेल्लां-ए एक ओर चिमतकार होया। एक फौजी ईसा दीख्या, जिसकै सिर ना था। अर, ओ भी पैह्‌रा देण लाग रह्‌या था। तड़का होया तै डाक्कू मूं-अंधेरे देक्खण आए अक फौजी दिन मैं कित चाल्ले जां सैं। फौजी कोन्यां दीक्खे। डाक्कू दूसरे दन फेर लस्कर के पाछै लाग लिए।

दूसरे दन भी न्यूं-ए बणी जो पहलड़े दन बीत्ती थी। डाकुआं नैं ओर भी अचम्भा होया। वे तीसरे दन भी गेल्लां लाग लिए। तीसरी बर भी उनका काम कोन्यां बण्या। चौथे दन डाक्कू सूधे सेट के धोरै पहोंच गे।

सेट नैं उनके बारे मैं बूज्झ्या। डाक्कू बोल्ले- हम तै डाक्कू सैं पर इस टैम थारे धोरै एक बात बूज्झण आए सैं। दन मैं जिन फौजियां का नाम नसान भी कोन्यां दीखदा, वे चाणचक रात नैं कित तै आ ज्यां सैं? गेल्लां-ए या बात ओर बताओ अक दुनिया मैं हमनै आदमी तै घणे देक्खे पर ईसा कोए कद्‌दे ना देख्या जिसका सिर-ए ना हो। थारे इस मूंडकटे फौजी का भी जुआब कोन्यां। चाल्लै सै, पैहरा दे सै पर उसनैं दीक्खै क्यूकर सै, या बात सिमझ मैं कोन्यां आई।

सेट नैं डाकुआं की बात सुणी। ओ भी हैरान रह ग्या। माड़ी वार कुछ सोच कै बोल्या, "इस बात का बेरा रात नै लाग्गैगा। आज रात नैं तम फौजियां नै फेर देखियो।" सेट की बात मान कै डाक्कू चाल्ले गए।

सेट कै बिस्वास हो ग्या अक यो सारा नौकार मंतर का असर सै। ये फौजी भी नौकार मंतर के पैंतीस अक्सरां के हुकम पै चाल्लण आले देवता सैं। एक फौजी के सिर ना होण का मतबल सै अक मेरे मंतर के पाट मैं कोए कमी सै। उदन रात होई तै सेट नै पूरे ध्यान तै नौकार मंतर पढ्या। पढती हाणा उसनैं बेरा पाट्या अक मंतर के आखरी सबद की बिन्दी उसपै बोल्ली-ए ना जा थी। उस टैम सेट नैं मंतर का सुध पाठ कर्‌या अर सो ग्या। डाक्कू आए। उन नैं देख्या अक फौजी पैह्‌रा देण लाग र्‌हे सैं पर बिना सिर का जो फौजी था ओ उन मैं कोन्यां। तड़कै उनती सेट आग्गै रात नैं बीत्ती होई सारी बात कैह दी।

सेट नैं कही- "भाइयो! बात या सै अक मैं एक मंतर का जाप कर्‌या करूं। उसका नां सै नौकार मंतर। उसके पांच सबद अर पैंतिस अक्सर सैं। तमनैं जो फौजी देक्खे, वे फौजी कोन्यां थे। वे तै देवता सैं। वे नौकार मंतर की पूज्जा करण आले सैं अर पूज्जा करण आलां की इमदाद भी कर्‌या करैं।

एक अक्सर की बिन्दी मेरे पै बोल्ली ना जा थी, जाएं तै तमनैं बिना सिर का फौजी देख्या था। उसका सारा रूप बाद मैं परगट होया जिब मन्नैं मंतर का सुध पाट कर्‌या।"

सेट तै नौकार मंतर की मैह्‌मा सुण कै डाकुआं नैं बूज्झी- के हम नैं भी इस मंतर का बेरा लाग सकै सैं? सेट बोल्या, "लाग क्यूं ना सकदा? तम

ये भूंडे काम छोड़ द्‌यो अर इस मंतर का पाट करण लाग ज्याओ। थारे सारे पाप भी यो मंतर धो देगा। थारी आतमा मैं लुक्या होया देवता परगट हो ज्यागा। जणा-जणा थारी इज्जत करण लाग ज्यागा।"

डाकुआं नैं सेट की कही मान ली। वे भले माणस बणगे अर मंतरां के राज्जा नौकार मंतर का जाप करण आले बणगे। ❑❑

भगवान महावीर अर चण्डकोसिया सांप

भगवान् महावीर जैन धरम के चोबिसमें तिरथंकर थे। एक बर वे चाल्ले जां थे। जिस राही पै वे आग्गे नैं चालते जां थे वा घणे डूंगे जंगल कान्नीं जा थी। जिब्बै-ए पाच्छे तै भाजते होए दो-चार पालियां नै महावीर तै बोल दे कै कह्या-

"बाब्बा..... ओ बाब्बा! ठैह्र जा! इंग्घे नै मतन्या जा।"

महावीर ठैह्र गे। धोरै आए पालियां तै महावीर नैं बूज्झ्या- "क्यूं? के बात सै? तम मन्नै क्यां खात्तर बोल द्यो थे?"

पाली बोल्ले-"आग्गै एक खतरनाक सांप र्‌हे सै। उसका नां सै चण्डकोसिया। ओ घणा-ए जैह्‌री सै। आदमियां की तै बात-ए के सै..... जिनावर भी उसकी फफकार तै डरै सैं। उसनै तो मोक्का मिलणा चहिए। उसकी फफकार मैं इतणी जान सै अक अकास मैं उड़ते होए पक्सी भी खिंच कै तलै आ पड़ैं सैं। जंगल के पेड़-पौद्‌धे भी उसके जैह्‌र तैं भसम हो लिए सैं- इसा सांप इस जंगल मैं र्‌हे सै। जाएं तै इंग्घे कै मतन्या जाओ। हाम थमनैं दूसरी राही बता देंगे। ओड़े कै लिक्कड़ जइओ।"

महावीर नै चण्डकोसिया सांप के खतरे के बारे मैं सुण्या। उनके भित्तर प्यार उमड्‌याया। वे बोल्ले, "सांप तै मेरा दोस्त-ढब्बी सै। मैं उस्से के धोरै जां सूं।" ग्वाले देखदे रैह्‌गे। महावीर आग्गे नैं चाल पड़े।

चालते-चालते महावीर सांप की बाँबी धोरै पहोंच गे। ओड़ै पहोंच कै वे ध्यान करण लाग्गे।

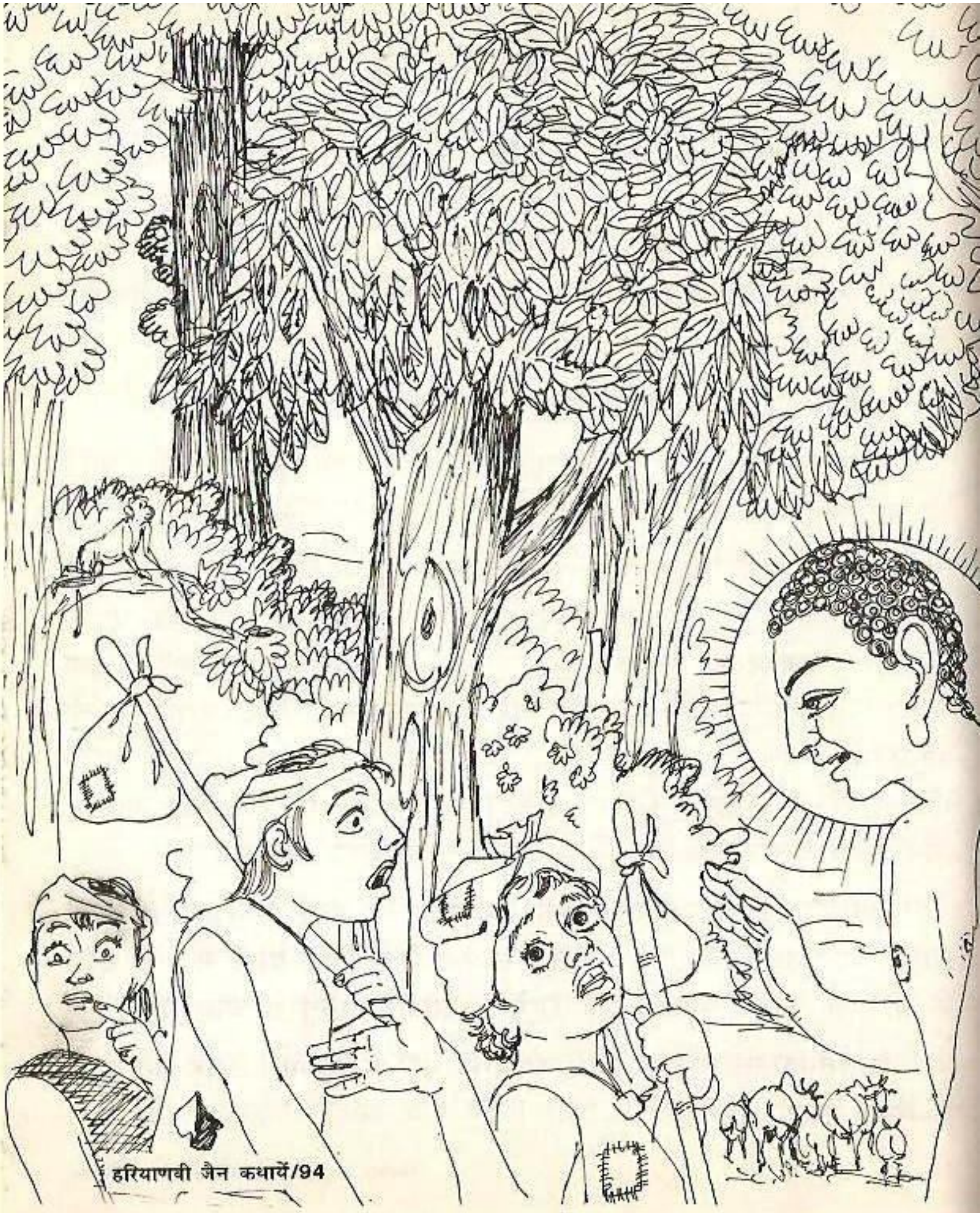

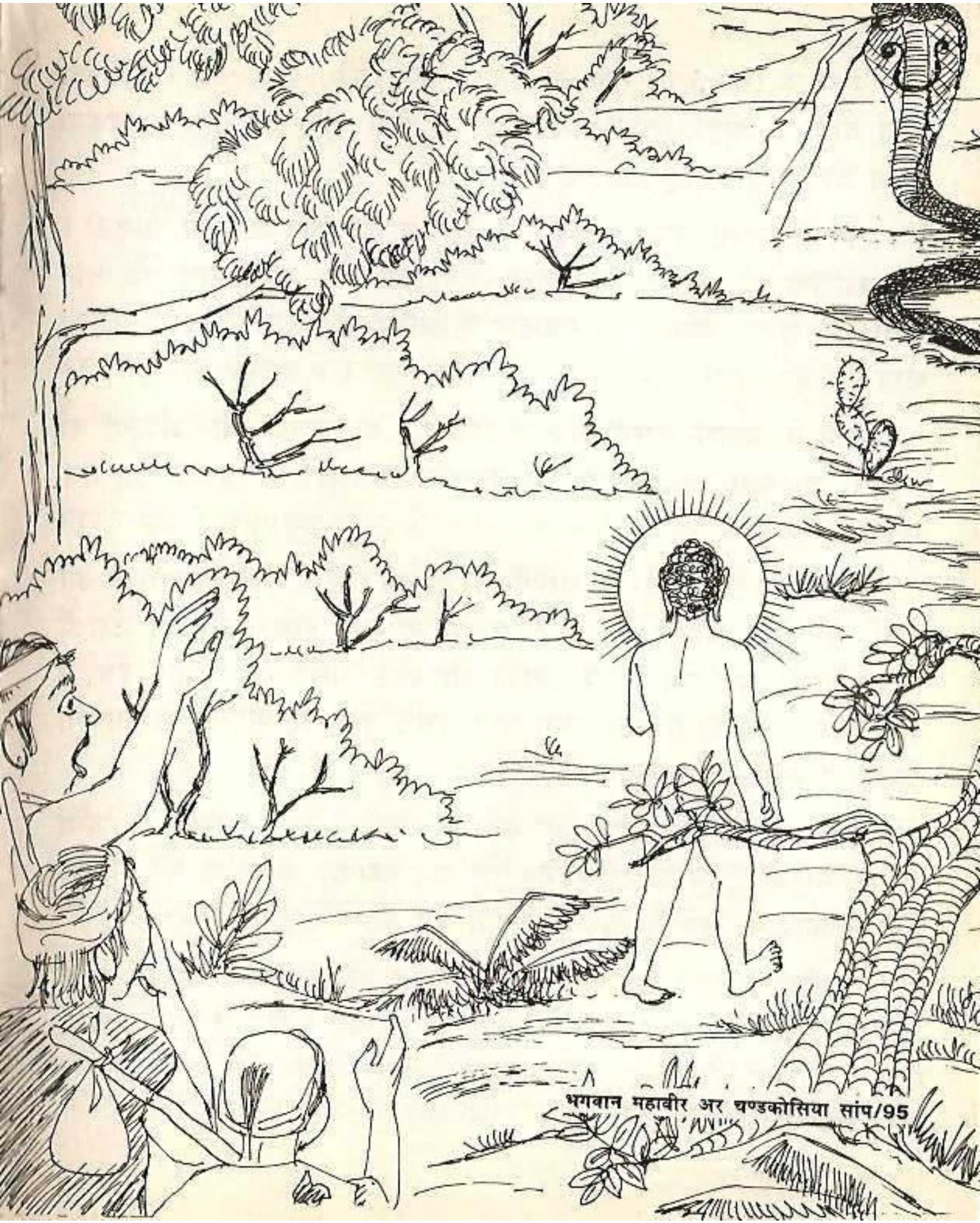

बाँबी के भित्तर पड़े सांप नैं आदमी की खसबू आई। ओ फफकारता होया बाँबी तैं बाहूर लिकड़्याया। उसनैं बाँबी धोरै एक आदमी खड़्या देख्या तो उस नैं छोहू आ ग्या।

सब तैं पहलां उसनै महावीर पै आपणी जैहूरीली फफकार छोड़्डी। चण्डकोसिया की फफकार मैं इतणा जैहूर था अक वा जिसकै भी लाग जांदी, ओ हे मर जांदा। पर महावीर पै उसका माड़ा-सा भी असर कोन्यां होया।

सांप नै आपणी दूसरी ताक्कत दिखाई। वा ताक्कत थी- आंख्यां का जैहूर। जैहरीली आंक्खां तै ओ लगातार महावीर नैं देखदा रहूया। देखदा-ए रहूया।

सांप जिब किस्से दूर के पराणी नैं भी इस तरियां देख्या करता तै ओ माड़ी वार मैं-ए बेहोंस हो कै ढै पड़्या करदा। इसा जैहूर था उसकी आंक्खां मैं। पर महावीर पै उसका भी कोए असर ना होया। ईब तै चण्डकोसिया के जी मैं आग लाग गी। उसनैं पूरे छोहू मैं भर कै आपणी तीसरी ताक्कत का इस्तेमाल कर्‌या।

गुस्से मैं भरे फफकारते होए सांप नैं ध्यान मैं खड़े महावीर के पायां मैं डंक मार्‌या। ईब कै उसके जैहूरीले दांद महावीर के पां के गूंठे मैं गड गे। महावीर के गूंठे तै खूनं की जंगा दूध बैहूण लाग्या।

ज्यूं देख कै सांप नैं घणा ताज्जब होया। ओ लखता-ए रैहू ग्या अक यो किसा आदमी आया। यो आदमी सै अक द्यौता? खून तै सारे माणसां मैं कै लिकड़्या करै सै पर यो महापुरस कुण सै जिसके सरीर तै खून की ज़ंगा दूध बैहूण लाग रहूया सै?

महावीर नैं दया-धरम का इमरत बरसाते होए कह्या-

रै सांप्पां के राज्जा! सिमझ!

सिमझ!!

सिमझ!!!

छोह् का नतीज्जा तन्नैं देख लिया। तू आपणा बीत्या होया टैम याद कर। तू इसा क्यूकर बण ग्या? सरप की जून मैं क्यूं आया? ईब इस हाल नैं छोड दे।

महावीर की बात सुण कै चंडकोसिया सांप नैं होंस आया। उस नैं आपणे पाछले जनम का ग्यान हो ग्या। इस ग्यान मैं चंडकोसिया नैं आपणे पहल्यां के जनम देक्खे। ओ देक्खण लाग्या- पराणे टैम के एक जनम मैं ओ मुनी था। उसका नां गोभद्दर था। लापरवाही तै चालती हाणां गोभद्दर मुनी के पायां तलै एक मींडक आ ग्या। मींडक ओड़ै-ए मर ग्या। मुनी नै बेरा ना पाट्या।

पाछै-पाछै आंदे चेल्ले नैं सब किमे देख लिया। उसनैं गरू जी कै या बात याद कराई अर आपणी आतमा की सफाई करण की कही। गोभद्दर मुनी नैं छोह आ गया। वे बोल्ले, "तन्नैं घणा दीक्खै सै? मन्नैं तै कितै ना दीख्या। पड्या होगा राह मैं पहल्यां तै-ए मर्या होया। मैं मींडक क्यूं मारदा?"

चेल्ला चुप हो ग्या। रात नै ध्यान (परति-करमण) करदी हाणां चेल्ले नै गरूजी कै फेर वा-ए बात याद कराई। कह्या- "गरू जी! आलोचना कर ल्यो।" गोभद्दर मुनी कै या बरदास कोन्यां होई। उन नैं आपणा डण्डा ठाया

अर चेल्ले कै मारण भाज्जे। आग्गै भाजते होए ओ एक खम्भे तै टकरा गे अर ओड़ै-ए उनका सरीर पूरा हो ग्या।

सरपराज चण्डकोसिक नैं आग्गै आपणे ग्यान मैं देख्या- मैं गोभद्दर मुनी की देही छोड कै अगनीकुवार देवता बण्या। ओड़ै भी मेरा छोह ठण्डा कोन्यां होया। देवता की उमर पूरी कर कै मैं फेर कोसिक नां का बाह्मण बण्या। छोह की मारी सारे मन्नै चण्डकोसिक कैह्ण लाग्गे। उस जनम मैं मेरी गेल्लां ओर के के होई? मेरा एक बाग था। उसमैं एक दन जिनावर बड़ गे। उन गूंगे जिनावरां नै फल़-पोद्धे खा गरे। न्यूं देख कै मन्नैं घणा-ए छोह आया। मन्नैं कुहाड़ा ठाया अर उन नै मारण भाज्या। जिब्बै-ए राह के एक खड्डे मैं ढै पड्या अर मेरी मोत हो गी।

उस्सै छोह का नतीज्जा सै अक आज मैं सांप की जून मैं आ ग्या। आपणा बीत्या होया टैम देख कै, छोह का नतीज्जा सिमझ कै, ओ ठण्डा पड़ ग्या।

उसनैं महावीर की गुवाही तै आपणे भित्तर कद्दे भी छोह ना करण का नेम कर लिया। गेल्लां-ए उसनैं यो संकल़प भी कर लिया अक मन्नैं जो लोग सतावैंगे अर दुःखी करैंगे, जै वे बदला लेंगे, जिब भी मैं ठण्डक राख कै उनके दीए होए दुख बरदास करूंगा। जांए तै उसनैं आपणा मूं बाँबी कै मोरे मैं गेर कै, बाक्की देही बाह्र छोड दी। अर, बोल-बाला हो कै पड़ ग्या।

आगले दन पालियां के जी मैं ललक ऊट्ठी अक जो साद्धू चंडकोसिए के जंगल़ कान्नीं चाल्ले गए थे, उन पै के बीत्ती होगी? सारे के सारे जंगल़ कान्नीं चाल पड़े। चालते-चालते वे ओड़ै पहोंच गे जित महावीर ध्यान करैं थे। धोरै-ए सांप की बाँबी भी थी। वे लुक-लुक कै